**महिलाओं पर विशेष..**

# नारी बने कल्याणी

**ब्र.कु श्वेता, शान्तिवन**

गीता- अरे, शीला तुम

रीना- हां गीता राम-राम

गीता- क्या हाल-चाल है, काफी दिनों बाद दिखाई दी

रीना- अरे, कैसे हाल-चाल, अपना तो वही पुराना गृहस्थी का रोना

गीता- सब ठीक तो है?

रीना - अरे, ठीक कभी हुआ है, कुछ न कुछ चलता ही रहता है। अभी परसो ही सास के साथ झगड़ा हुआ। बात क्या थी, छोटी-सी थी, इतना बढ़ा दिया। मैं भी कम थोड़े ही थी, खरी-खोटी सुना दी।

गीता- फिर

रीना - फिर क्या, रात को इनके आगे मेरी शिकायत की। ये मुझ पर बरस पड़े।

गीता- ओहो

रीना - चलो, तुम सुनाओ, क्या चल रहा है?

गीता- बस, और तो सब ठीक है, बच्चे बात ही नहीं मानते। मिनी जब देखो, ब्यूटी पार्लर में घुसी रहती है। और बंटी को दोस्तों से ही फुर्सत नहीं मिलती। पढ़ाई-लिखाई पर किसी का ध्यान नहीं

रीना - तुम उन्हें टोकती नहीं?

गीता- अरे, सारे दिन कहती रहती हूँ पर कोई सुने भी ना

रीना - हां बहन, आजकल की नई पीढ़ी किसी की सुनती नहीं। घर-घर का यही रोना है।

गीता- अरे देखो, सामने से शोभा आ रही है, बड़ी खुश नज़र आ रही है। पिछले कुछ दिनों से चेहरे पर अलग ही चमक आ गई है।

रीना - अरे शोभा, कैसी है

शोभा – मजे में हूँ, तुम लोग कैसे हो?

रीना - हम तो बस अपना-अपना दुखड़ा सुना रही थी। अच्छा तुम हमेशा खुश कैसे रहती हो, तुम्हारे पास कोई समस्या नहीं आती क्या?

शोभा- अरे बहनों, समस्यायें तो आती ही हैं। समस्यायें किसके पास नहीं आती, पर मैं समझदारी से उनका हल निकाल लेती हूँ।

रीना - कैसे?

शोभा- अभी देखो, पिछले दिनों ही मेरी देवरानी ने सब्जी बनाई। सब्जी में नमक ज्यादा डल गया था। घरवाले भोजन पर आये तो पूछने लगे, सब्जी किसने बनाई, मैंने कहा, सब्जी तो मैंने बनाई है। देवरानी ने अंदर से सुन लिया। उसके बाद तो वो जैसे मुझ पर फिदा ही हो गई। पहले तो कहने से भी नहीं करती थी, अब बिना कहे ही काम कर लेती है।

रीना - अरे, मैं तेरी जगह होती तो सबको बताती कि आज देवरानी ने सब्जी बनाई है।

शोभा- यही तो समझदारी है, अगर मैं भी ऐसा करती तो जो देवरानी आज मुझे इतना प्यार कर रही है, वह ऐसा करती? रिश्तों में कड़वाहट आती सो अलग। यह कड़वाहट उस नमक की कड़वाहट से कई गुणा होती।

रीना - हां बहन, ये तो तुम ठीक कह रही हो, पर इतनी समझदारी तुममें आई कहां से?

शोभा- अच्छा एक राज़ की बात बताती हूँ, मैं रोजाना ब्रह्माकुमारी आश्रम जाती हूँ। वहाँ बताया जाता है कि महिलाओं के सामने कौन-कौन सी समस्यायें आती हैं और किस प्रकार से समझदारी से उन्हें सुलझाया जाये।

साथ ही नारी के लिए कौन-से मूल्य धारण करना आवश्यक है ताकि उसकी गृहस्थी अच्छी तरह से चल सके। यह भी बताया जाता है। नारी चाहे तो घर को स्वर्ग बना सकती है, चाहे तो नरक।

इसी तरह से बताया जाता है कि बच्चे की परवरिश कैसे करें, उनमें अच्छे संस्कार कैसे डालें। माँ बच्चे की भविष्य निर्माता होती है, अगर हमारे खुद के जीवन में मूल्य होंगे तो बच्चे अपने आप सीखेंगे।

गीता - हां बहन, ये बात तो तुम ठीक कहती हो, मैं भी सोचती थी, मैं बच्चों को इतना कहती हूँ पर ये मेरी बात सुनते क्यों नहीं। मैं ही सारे दिन टीवी देखती रहती हूँ। बच्चों के सामने कभी सास तो कभी देवरानी की चुगली करती रहती हूँ।

शोभा- हां बहन, देखो जीवन को मधुर, आनंदमय बनाने के लिए मूल रूप से कुछ बातें जरूरी हैं, तन स्वस्थ, धन पर्याप्त, अच्छे संबंध परंतु सबसे पहले मूल्य जरूरी हैं। आज घर-घर में झगड़े होने का कारण ही मूल्यों की कमी है। इनमें भी अगर हम बहनों के जीवन में मूल्य आ जायें तो हम अपने घर को तो क्या पूरे विश्व को स्वर्ग बना सकती हैं।

गीता- हां बहन, बात तो तूने बिल्कुल ठीक कही। तेरा बहुत-बहुत शुक्रिया जो तुमने आज हमें इतनी अच्छी बातें बताई।

शोभा- अरे, धन्यवाद तो हमें ब्रह्माकुमारी बहनों का करना चाहिए जो हम महिलाओं के लिए इतना कुछ कर रही हैं। सबसे बड़ी बात कि यह संस्था सारे विश्व में महिलाओं के द्वारा संचालित सबसे बड़ी संस्था है। इन बहनों ने हम महिलाओं को हमारा खोया हुआ सम्मान वापस दिलाया है।

रीना – लेकिन मैंने तो सुना था कि ये बहनें घर-बार छुड़ा देती हैं। इसी कारण से मैं वहाँ नहीं जाती।

शोभा – यह तो गलत धारणा है। वास्तव में ये बहनें घर-बार नहीं छुड़ाती बल्कि हमारे अंदर के अवगुण, बुराई को छुड़ाती हैं। संस्था से 10 लाख परिवार जुड़े हैं। वहाँ आने वाले भाई-बहनें अपने घर-परिवार की सभी जिम्मेवारियों को निभाते हुए सिर्फ एक घंटा ईश्वरीय ज्ञान को सुनने में लगाते हैं और इससे उनके जीवन में

चमत्कारिक परिवर्तन आये हैं। पहले जहाँ घर में कलह-क्लेश होती थी, आज घर जैसे स्वर्ग बन गया है। ये बहनें तो बहुत अच्छा कार्य कर रही हैं जो घर-घर को स्वर्ग बना रही हैं।

रीना – अच्छा, आज के कलियुग में कभी भी सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिए। इससे हम अच्छी चीजों से भी वंचित रह जाते हैं। चलो बहन, कल से हम सभी मिलकर वहाँ जायेंगे।

(गीत : जन-जन का कल्याण करे तू शिव की शक्ति है नारी....)